दादा भगवान परिवार का

सितंबर २०२४

शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

संपादकीय

बालमित्रों,

क्रिश की बर्थडे पार्टी में विवेक टाइम पर नहीं पहुँच पाया। क्रिश को विवेक पर बहुत गुस्सा आया, 'तुम्हें मेरी कोई परवाह ही नहीं है। आज से तुम मेरे फ्रेन्ड नहीं हो।' कुछ दिनों बाद, ट्रैफिक के कारण क्रिश स्कूल पहुँचने में लेट हो गया और टीचर ने उसे पनिश किया। तो क्रिश ने सोचा, 'मैं तो टाइम पर ही पहुँचना चाहता था, लेकिन ट्रैफिक के कारण नहीं पहुँच पाया।' लेकिन, जब क्रिश ने विवेक का नेगेटिव देखा उस समय यह क्यों नहीं सोचा?

क्या आप भी क्रिश की तरह बिना सोचे-समझे अपने फ्रेन्ड्स के नेगेटिव देखकर उससे फ्रेन्डशिप तोड़ देते हो? बिना कुछ सोचे-समझे आसपास के लोगों के लिए नेगेटिव अभिप्राय बना लेते हो?

चलो, इस अंक में देखें कि स्वरा को ऐसा क्या मिला जिससे उसकी नेगेटिव दृष्टि बदल गई? आनंदी ने दवाखाने में क्या देखा? और साथ ही ज्ञानी की पॉज़िटिव समझ प्राप्त करें और जादुई चश्मे से सभी का पाज़िटिव देखना सीखें।

-डिम्पल मेहता

अक्रम एक्सप्रेस

वर्ष : १२ अंक : ०६
अखंड क्रमांक : १३८
सितंबर २०२४

Editor: Dimple Mehta

Printer & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Owned by and Published from
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Printed at
Amba Multiprint
Opp. H B Kapadiya New High School,
Chhatral-Pratappura Road,
At-Chhatral, Tal. Kalol
Dist. Gandhinagar – 382729.

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सीटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : ९३२८६६११६६/७७
email:akramexpress@dadabhagwan.org

© 2024, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

ज्ञानी कहते हैं...

पॉज़िटिव देखने से हमारे अंदर बहुत शांति रहती है। नेगेटिव से हमेशा भोगवटा आता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन मुझे पॉज़िटिव नहीं दिखता।

पूज्यश्री : आपके चश्मे टेढ़े हैं इसलिए नहीं दिखता। बाकी, इसकी जाँच ही कहाँ की है कि है या नहीं। अभिप्राय दे दिया, ये लोग ऐसे ही हैं। निरीक्षण करना चाहिए, ऑब्ज़र्वेशन। ऑब्ज़र्वेशन करोगे तो पॉज़िटिव दिखेगा। बाकी, अभिप्राय नहीं दे देना चाहिए कि इसमें पॉज़िटिव है ही नहीं, सिर्फ नेगेटिव ही है।

क्या रसोई में चाकू लोगों की ऊँगलियाँ ही काटता है? नहीं, आपको उसका इस्तेमाल करना नहीं आता इसलिए ऊँगली कट जाती है। नहीं तो चाकू गोभी काटता है, टमाटर काटता है, मक्खन लगाता है। कितना अच्छा काम करता है। चाकू का काम क्या चम्मच कर सकता है? 'यह चम्मच काम का नहीं है और चाकू अच्छा है', क्या यह बोलते रहने की ज़रूरत है? अर्थात् सभी अपनी-अपनी जगह पर योग्य हैं। हमें किसी की गलती नहीं निकालनी चाहिए।

हमारे चश्मे के काँच में दरार हो तो सब विचित्र दिखाई देता है। हमें लगता है कि सब ऐसा खराब क्यों दिखाई दे रहा है? इसमें किसकी गलती निकालनी चाहिए? काँच की गलती है या सामने वाला व्यक्ति टेढ़ा-मेढ़ा हो गया है? हमारे चश्मे की वजह से टेढ़ा दिख रहा है। सामने वाला टेढ़ा नहीं है।

टेढ़ा देखा उसका प्रतिक्रमण करना। तो आप शुद्ध हो जाओगे और गुनाह धुल जाएगा।

नेगेटिव अभिप्राय के कारण गुस्सा आए तो पॉज़िटिव अभिप्राय बनाएँ।
उदाहरण के तौर पर : 'टीचर बहुत गुस्सैल हैं' ऐसे नेगेटिव अभिप्राय के सामने 'टीचर बहुत अच्छे हैं, बहुत उपकारी हैं', ऐसे पॉज़िटिव अभिप्राय बना लें तो गुस्सा शांत हो जाएगा।

यह तो नई ही

नेगेटिव से खुद को भी नुकसान होता है और दूसरों को भी नुकसान होता है। पॉज़िटिव खुद का भी हित करता है और दूसरों का भी हित करता है।

‘मुझे पॉज़िटिव देखना है, मुझे पॉज़िटिव देखना है’, ऐसा निश्चय करोगे तो पॉज़िटिव दिखेगा।

बात है!

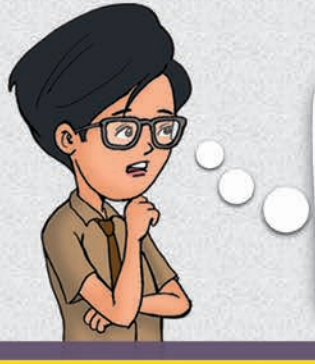

मेरा इसके साथ कोई झगड़ा नहीं हुआ। पर फिर भी मुझे इसके साथ बात करना क्यों अच्छा नहीं लगता?

यदि मैं आपके लिए गलत सोचता रहूँ तो आप जितनी बार मुझे मिलोगे तब-तब आपको मेरे साथ बात करना अच्छा नहीं लगेगा। क्यों? क्योंकि मेरे नेगेटिव अभिप्राय से आपको दुःख महसूस होता है। उदाहरण के तौर पर : अगर आपको स्कूल का मॉनिटर अच्छा नहीं लगता है तो जब भी वह आपको मिलेगा तब उसे आपके साथ बात करना अच्छा नहीं लगेगा। क्योंकि, आपके कहे बिना ही आपके नेगेटिव अभिप्राय उस तक पहुँच जाते हैं।

खुशाली और आनंदी

आनंदी, मैंने तुम्हें मेरी चीज़ों को हाथ लगाने से मना किया है न, फिर भी तुम्हें मेरी चीज़ें ही चाहिए।
सॉरी दीदी। आप आज स्कूल में घड़ी पहनकर जाना भूल गई, इसलिए मैंने पहन ली।
अब मैं इसे अलमारी में इस तरह रख दूँगी कि तुम्हें मिले ही नहीं।
कुछ दिनों बाद,
मम्मी, मेरी बर्थडे पार्टी की थीम 'ग्रीन' रखेंगे।
सभी को 'ग्रीन' कलर पहनकर आना होगा। सभी चीज़ें भी ग्रीन होंगी।
और मैं अपनी पार्टी के लिए 'ग्रीन' कलर का एक ड्रेस खरीदूँगी।
दीदी, तो क्या मैं आपका वह ग्रीन कलर का टी-शर्ट पहन सकती हूँ?
बिल्कुल नहीं। तुम्हारे पास ग्रीन कलर के कितने सारे कपड़े हैं। उनमें से पहन लेना।

बर्थडे पार्टी के दिन,
हाय आनंदी, हमारी बर्थडे गर्ल कहाँ गई?
वह तैयार हो रही है। पता है प्रीति दीदी, खुशाली दीदी के पास भी ऐसा ही टी-शर्ट है।
अरे, यह तो खुशाली का ही है। चलो, मैं उससे मिलकर आती हूँ।
दीदी मुझे क्यों पसंद नहीं करती? वह अपनी फ्रेन्ड्स को अपनी चीज़ें देती है, लेकिन मुझे कभी नहीं देती।
हैप्पी बर्थडे माइ डियर। देखो, तुम्हारे लिए क्या लेकर आई हूँ।
ओह वाउ! अमेरिका की स्पेशल चॉकलेट्स! मैं चॉकलेट को और चॉकलेट मुझे कहीं न कहीं से ढूँढ़ ही लेते हैं।
लेकिन दीदी, आपको अभी इतनी सारी चॉकलेट्स नहीं खानी चाहिए। आपका दाँतों का ट्रीटमेन्ट चल रहा है न।
यह तय करने वाली तुम कौन होती हो? तुम्हें चाहिए इसलिए ऐसा कह रही हो न? तुम मेरी बातों में बीच में मत बोलो।
दूसरे दिन खुशाली का दाँत के डॉक्टर के साथ अपॉइन्टमेन्ट था।
खुशाली, तुम्हारे अपॉइन्टमेन्ट के बाद हम वीणा ऑन्टी के साथ शॉपिंग करने जाएँगे। ऑन्टी भी हमारे साथ चलेंगी।

मम्मी, मैं भी चलूँ?
खुशाली मना करे उससे पहले ही मम्मी ने 'हाँ' कह दिया।
दवाखाने में,
अरे, खुशाली कहाँ चली गई। उसका नंबर आने वाला है और यह लड़की गायब हो गई। आनंदी, जाकर देखो तो।
जो देखा उसे देखकर आनंदी स्तब्ध रह गई। दवाखाने से लेकर घर वापस आने तक वह कुछ नहीं बोली।
घर पहुँचकर,
क्या हुआ आनंदी? इतनी चुप क्यों हो? वैसे तो हर समय बक-बक करती रहती हो!
आनंदी, दीदी के गले लग गई।

दीदी, दवाखाने में जब मैं आपको ढूँढ़ने आई थी तब मैंने देखा कि आपने अपनी सारी चॉकलेट्स गरीब बच्चों में बाँट दी।
आपको चॉकलेट्स कितनी पसंद हैं। फिर भी आपने सबको बाँट दी। आप मेरी चॉकलेट्स भी ले लो।
दीदी, आप कितनी अच्छी हैं! लेकिन आप मेरे साथ अपनी चीज़ें क्यों शेयर नहीं करती हो?
क्यों? मेरा दाँतों का ट्रीटमेन्ट पूरा नहीं होने दोगी क्या?
बुद्धु, प्रीति के पास पार्टी में पहनने के लिए कपड़े नहीं थे। तुम्हारे पास तो कितने सारे हैं? और तुम ही कहो कि अब तक तुमने मेरी कितनी सारी घड़ियाँ खराब की हैं?
सॉरी दीदी, मैं हमेशा आपको गलत समझती रही। लेकिन आप तो कितनी...
बस-बस अब, ज्यादा मस्का पॉलिश मत करो!
9 Akram Express

आलु के स्केटिंग कॉम्पीटिशन जीतने के बाद चिली ने उसके लिए सरप्राइज़ पार्टी रखी थी। वहाँ पर चिली को अंदर गरम-गरम लग रहा था इसलिए वह बाय कहे बिना ही पार्टी छोड़कर घर आ गया था। आलु पार्टी के बाद चिली से मिलने उसके घर पर आया हुआ है। चिली को उससे मिलने की बिलकुल भी इच्छा नहीं है। अब आगे...

AALOO CHILLY

मुझे अंदर इतना 'गरम-गरम' लग रहा था लेकिन आलु को तो मेरी कुछ परवाह ही नहीं थी। उसका ध्यान तो अपनी ट्रॉफी पर ही था।

आलु खुद की तारीफ करके बोर नहीं हुआ लेकिन मैं उसकी बातें सुनकर ऊब गया था। ठीक है कि वह जीत गया है, लेकिन इस तरह नॉन स्टॉप अपनी तारीफ कौन करता है? वह मुझसे कहने लगा कि "थीओ 'चिली शेक' का नाम बदलकर 'आलु शेक' करना चाहता है।" लेकिन मैंने उससे कह दिया कि "तुम इसका नाम 'आलु-चिली शेक' कर दो। क्योंकि चिली का सिंगिंग कॉम्पिटिशन आ रहा है और इस बार वह भी जीतने ही वाला है।"

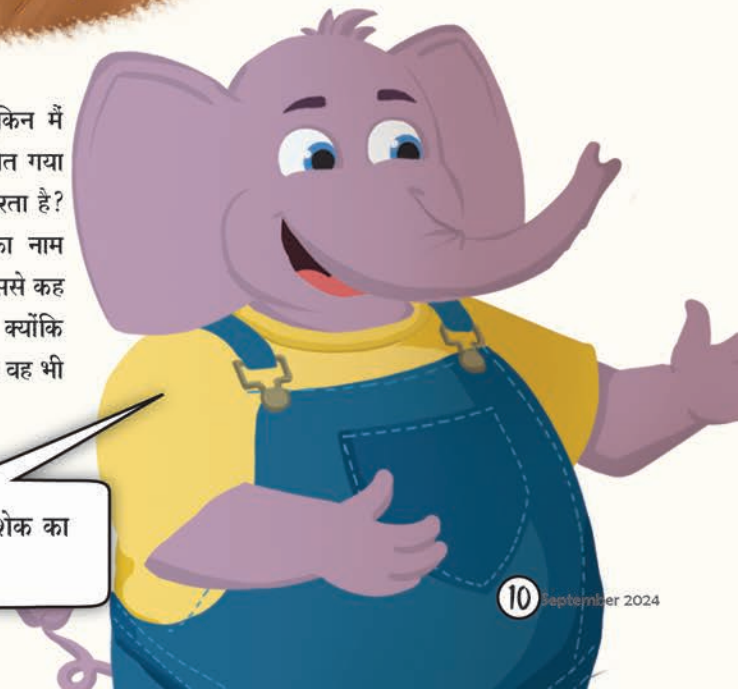

मुझे लगा कि एक तो 'चिली शेक' में 'आलु' घुस गया और उसमें भी आलु का नाम पहले है? इसमें खुश होने जैसा क्या है? फिर आलु ने मुझसे कहा कि 'चिली, थैंक यू। तुमने मेरी बहुत हेल्प की।' और फिर उसने मुझे अपनी ट्रॉफी दे दी। उसकी इस बात से मुझे इतना ठंडा लगा, इतना ठंडा लगा कि कुछ ठंडा खाने की इच्छा हुई थी वह भी चली गई। मैंने तुरंत उससे कह दिया...

अब तो मुझे जीतना ही होगा। जाते-जाते आलु ने मुझसे कहा, 'देर तक मत जागना। तुम्हारी आवाज़ के लिए अच्छा नहीं है। हम सुबह रियाज़ के लिए मिलेंगे।' रियाज़ के ख्याल से मुझे अच्छी नींद आ गई।

सुबह उठकर...

अभी तक हम आलु की स्केटिंग की प्रैक्टिस कर रहे थे। अब हम मेरी सिंगिंग की प्रैक्टिस करने के लिए मिलेंगे। और जब मैं यह कॉम्पिटिशन जीत जाऊँगा तब आलु की तरह मेरे विनिंग स्पीच में उसको नहीं भूलूँगा।

मेरी सफलता का कारण मेरी मधुर आवाज़ और आलु का प्रोत्साहन है। सभी ने कहा था कि कोको कोयल को कोई नहीं हरा सकता। लेकिन मुझे खुद पर पूरा विश्वास था।

अभी मैं ट्रॉफी लेने के बारे में सोच ही रहा था कि उसी समय पार्सली उड़कर मेरे मुँह के बिल्कुल नज़दीक आकर खड़ा हो गया। अचानक पार्सली को इतने क्लोज़प में देखकर मुझे शॉक लगा। इतना ही नहीं, लेकिन वह कुछ गा रहा था। पार्सली को गाते हुए सुनना जीवन का सबसे बड़ा दुर्भाग्य ही कहा जाएगा। यदि आप उसको गाते हुए सुनोगे तो आपको ऐसा लगेगा कि 'काश, मुझे सुनाई देना बंद हो जाए!'

लेकिन यह पार्सली क्या गा रहा है? मुझे चक्कर क्यों आने लगे?

अचानक यह क्या हो गया? पार्सली ने ऐसा क्या गाया कि कुछ देर पहले इतना अच्छा सपना देख रहे चिली को अचानक चक्कर आने लगे?

अचानक यह क्या हो गया? पार्सली ने ऐसा क्या गाया कि कुछ देर पहले इतना अच्छा सपना देख रहे चिली को अचानक चक्कर आने लगे?

चश्मे का बॉक्स़

एक सुंदर लड़की थी। उसका नाम स्वरा था। वह दिखने में खूबसूरत और बहुत कोमल थी। लेकिन जब भी कुछ कहने के लिए मुँह खोलती तो ऐसा लगता कि यह लड़की कुछ न बोले वही अच्छा है।

दादी तो स्वरा के लिए हमेशा यही कहतीं कि 'इस लड़की का क्या होगा? गुस्सा तो हमेशा इसकी नाक पर रहता है।'

मम्मी कहतीं, 'स्वरा पहले तो ऐसी नहीं थी। सबकी बात सुनती थी। और अब? अब तो उसे सबसे शिकायत रहती है।'

अगर छोटा भाई सुकेतु कुछ कहता तो स्वरा तुरंत ही उसे रोक देती, 'तुम तो बीच में बोलो ही मत। तुम्हारे कारण ही सब लोग मुझे डाँटते हैं। तुम मामा के घर चले जाओ तो कितना अच्छा होगा!'

यह सुनकर सुकेतु को आश्चर्य होता। वह मन में सोचता, 'अरे, मैं तो दीदी को खेलने के लिए बुलाने आया था। लेकिन...'

स्कूल के एग्ज़ाम नज़दीक आ रहे थे। इसलिए दोनों भाई-बहन को झगड़ने का समय ही नहीं मिलता था। स्वरा एग्ज़ाम की तैयारी में लग गई।

उस शाम पापा ऑफिस से घर आए और सभी को आवाज लगाकर कहा, 'जिसे गुलाबपाक खाना हो वह फटाफट हाथ धोकर डाइनिंग टेबल पर आ जाए।'

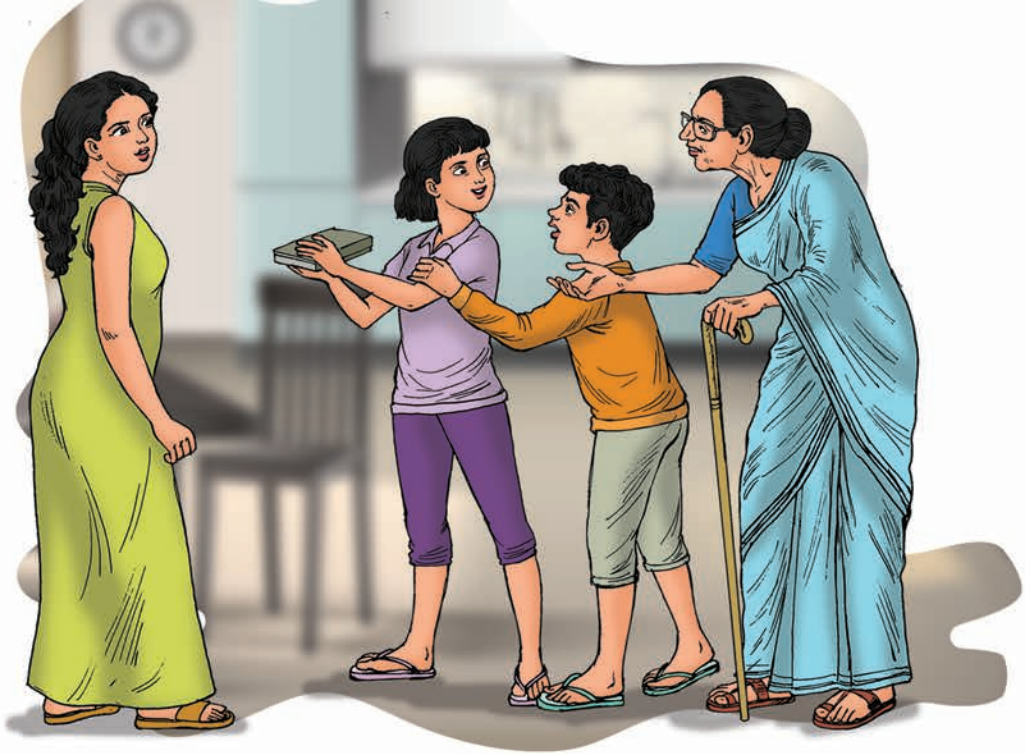

'गुलाबपाक...' कहते ही स्वारा के मुँह में पानी आ गया। उसने बॉक्स हाथ में लेते हुए कहा, 'आज सबको एक-एक टुकड़ा मिलेगा। और बॉक्स में बाकी बची सारी मिठाई मेरी होगी। या... हू... मजा आएगा।'

स्वरा की बात सुनकर मम्मी ने कहा, 'स्वरा, तुम भी एक ही टुकड़ा खाना। नहीं तो बीमार हो जाओगी।' स्वरा ने सभी को एक-एक टुकड़ा दिया और फटाफट तीन टुकड़े अपने मुँह में डाल दिए।

दादी माँ ने स्वरा के हाथों से बॉक्स ले लिया। वह मुँह फुलाकर पढ़ने के लिए चली गई। उसने मन में सोचा कि 'दादी खुद मिठाई नहीं खा सकतीं इसलिए मुझे भी नहीं खाने देतीं। और अगर सुकेतु एक माँगता है तो उसे दो देती हैं।' स्वरा विचारों में ऐसे खो गई कि उसका पढ़ने में मन ही नहीं लग रहा था।

दूसरे दिन स्वरा के गले में दर्द होने लगा। डॉक्टर ने कहा, 'अधिक मीठा खाने के कारण गले में इन्फेक्शन हो गया है। तीन दिनों तक खाने-पीने का ध्यान रखना और दवाई लेना।'

चार-पाँच दिनों में स्वरा बिल्कुल ठीक हो गई। दो दिन बाद परीक्षा शुरू होने वाली थी। अचानक उसे गुलाबपाक याद आ गया। उसने मम्मी से कहा, 'मम्मी, कुछ मीठा खाने का मन हो रहा है। पापा गुलाबपाक लाए थे वह दो न।'

'अरे बेटा, गुलाबपाक तो खत्म हो गया। तुम्हारी परीक्षा के बाद पापा से कहकर फिर से मंगवा लेंगे।' मम्मी ने कहा।

मम्मी की बात सुनकर स्वरा ने और कुछ खाने का सोचा। नाश्ता ढूँढ़ते समय उसे एक बॉक्स मिला, जिसमें गुलाबपाक था। यह देखकर उसने मम्मी से गुस्से में कहा, 'आपने मुझसे झूठ क्यों कहा? गुलाबपाक तो अभी भी बचा हुआ है।'

'ओह, मुझे लगा कि...'

मम्मी का वाक्य पूरा होने से पहले ही स्वरा कुछ भी खाए बिना वहाँ से चली गई।

दो दिन बीत गए। परीक्षा भी शुरू हो गई। पिछले तीन-चार दिनों से जो घटनाएँ हो रही थीं उसके विचार अभी भी स्वरा के मन में चल रहे थे। इस कारण उसके पहले दो पेपर अच्छे नहीं गए। आज उसके मनपसंद सब्जेक्ट गणित का पेपर था। उसने भगवान को याद करके पेपर लिखने की शुरुआत की।

एक घंटा पेपर लिखने के बाद उसे कुछ आवाज सुनाई दी। पीछे मुड़कर देखा तो उसके पीछे बैठी उसकी दो फ्रेन्ड्स, काव्या और नव्या, धीमी आवाज़ में कुछ कहने की कोशिश कर रही थीं। परीक्षा के बीच कोई उसके साथ बात करे यह उसे बिल्कुल पसंद नहीं था। इसलिए उसने दोनों से चुपचाप पेपर लिखने के लिए कहा।

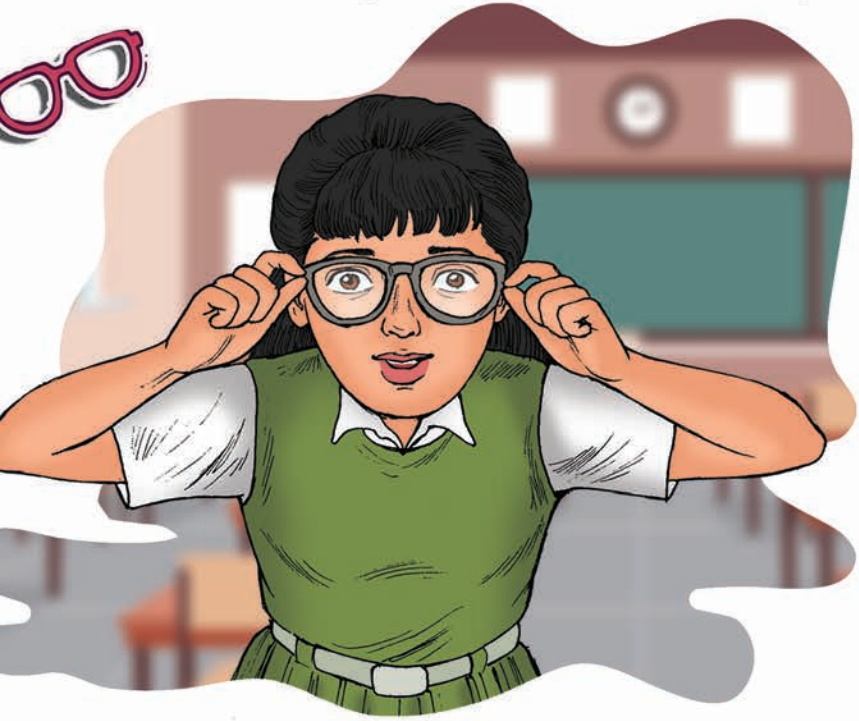

तभी टीचर ने उनको बातें करते हुए देख लिया। उन्होंने स्वरा से कहा, 'अगर फिर से किसी से कुछ पूछा तो पेपर ले लिया जाएगा।'

स्वरा ने खड़े होकर कुछ कहना चाहा लेकिन उसकी बात सुने बिना ही टीचर ने उसे बिठा दिया। यह देखकर उसे टीचर और अपने फ्रेन्ड्स, दोनों पर गुस्सा आया। और उसका पेपर भी अच्छा नहीं गया। एग्ज़ाम के बाद काव्या और नव्या स्वरा से बात करने गईं लेकिन स्वरा उनके सामने देखे बिना ही वहाँ से भाग गई।

घर पहुँचने पर खुश होते हुए मम्मी ने उससे कहा, 'तुम्हारा नया चश्मा आ गया है। दादाजी अभी-अभी लेकर आए हैं। देख लो कैसा है।' लेकिन स्वरा को नया चश्मा पहनने का कोई उत्साह नहीं था।

दूसरे दिन वह एग्ज़ाम हॉल में पहुँची। पेपर शुरू होने में दस मिनिट बाकी थे। उसने नया चश्मा पहना। पीछे मुड़कर देखा तो नव्या सोच रही थी कि 'एग्ज़ाम हॉल की घड़ी बंद हो गई है। कल स्वरा को यही तो बताना था। लेकिन वह गुस्सा हो गई। किस तरह बताऊँ? बस, उसका पेपर अधूरा नहीं रहना चाहिए।'

स्वरा हैरान रह गई। उसने चश्मा उतार कर नव्या की ओर देखा तो वह चुपचाप बैठी हुई थी। फिर से चश्मा पहन कर उसने काव्या की ओर देखा। वह सोच रही थी, 'भले ही स्वरा मुझ पर गुस्सा हो जाए। लेकिन आज तो उसे बताना ही है कि हॉल की वॉल क्लाक बंद है।' एग्ज़ाम शुरू होने में पाँच मिनिट बाकी थे तब उसने धीमी आवाज़ में स्वरा से कहा, 'स्वरा, तुम्हारी कलाई की घड़ी का इस्तेमाल करना।' स्वरा ने पीछे मुड़कर 'ओके' कहा।

वह सोचने लगी कि 'कल मैंने अपने फ्रेन्ड्स के लिए कितना गलत सोचा जबकि वे मेरे भले के लिए सोच रही थीं।'

एग्ज़ाम शुरू हो गई। टीचर की ओर देखकर स्वरा दो मिनिट के लिए रुक गई। वे चिंतित होकर मन में सोच रही थीं कि 'कल क्लास में बातचीत हो रही थी। आज कोई बात न करे तो अच्छा है। अगर बाहर से कोई इन्सपेक्शन के लिए आ गया तो मेरे स्टूडेन्ट्स को बेवजह पनिशमेन्ट मिल जाएगा।'

स्वरा को समझ में नहीं आ रहा था कि उसके साथ क्या हो रहा है। वह घर पहुँची। मम्मी रसोई में कुछ काम कर रही थीं। स्वरा ने चश्मा पहना तो मम्मी के मन की बात उसे पता चली। मम्मी सोच रही थीं कि 'मैं तो भूल ही गई थी कि डिब्बे में गुलाबपाक बचा है। लेकिन अच्छा हुआ स्वरा ने बासी गुलाबपाक नहीं खाया। परीक्षा के बाद मैं उसके लिए फ्रेश मिठाई बना दूँगी।' और पूजा घर में बैठे-बैठे दादी सोच रही थीं कि 'हे भगवान, मेरी स्वरा की परीक्षा अच्छी जाए।'

'ओहो... मैं कितनी गलत थी। मैं सबका नेगेटिव देख रही थी जबकि वे सब तो मेरी भलाई के लिए सोच रहे थे। मैंने सबको कितना दुःख पहुँचाया है।' तभी सुकेतु वहाँ से गुजरा। उसने सोचा कि ये लोग भले मेरे लिए पॉज़िटिव सोच रहे हैं लेकिन सुकेतु ज़रूर मेरे लिए नेगेटिव ही सोच रहा होगा।

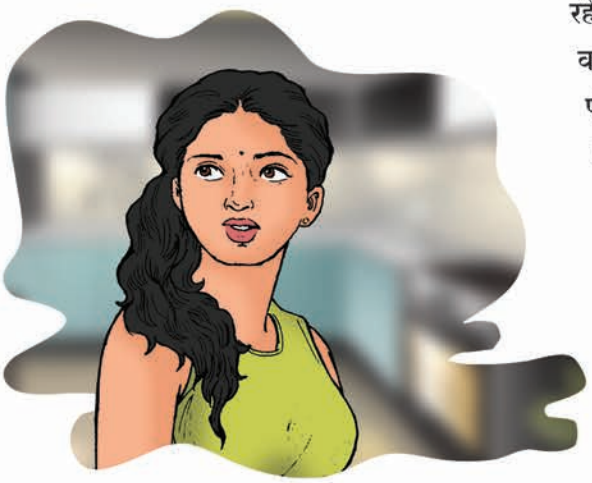

ऐसा सोचकर वह सुकेतु के पीछे जाकर खड़ी हो गई। वह सोच रहा था कि 'दीदी आएगी तो मैं उनसे ये सवाल पूछूँगा। मेरी दीदी गणित में बेस्ट है। मैं उसे बहुत परेशान करता हूँ। लेकिन मुझे दीदी के बिना अच्छा नहीं लगता है। मैं उसे सॉरी कह दूँगा।' यह जानकर स्वरा दौड़कर अपने रूम में चली गई। उसकी आँखें भर आईं।

कुछ देर बाद किसी ने उसके कंधे पर हाथ रखा। स्वरा ने पीछे मुड़कर देखा तो दादाजी थे। वे चश्मे का बॉक्स स्वरा को देते हुए बोले, 'सॉरी बेटा, कल गलती से दूसरा बॉक्स ले आया था। यह लो तुम्हारा चश्मा।'

दादाजी कुछ कहते उससे पहले ही स्वरा प्यार से उनके हाथ पकड़कर बोली, 'आपकी इस गलती ने मेरी दृष्टि खोल दी। यह जादुई चश्मा मेरे पास से कोई ले जाए फिर भी यह पॉज़िटिव दृष्टि तो मेरे साथ ही रहेगी।'

स्वरा क्या कह रही थी वह दादाजी को समझ में नहीं आया, लेकिन कई दिनों बाद स्वरा को इस तरह हँसते हुए देखकर उनकी आँखें भी खुशी से चमक उठीं।

चलो खेलें...

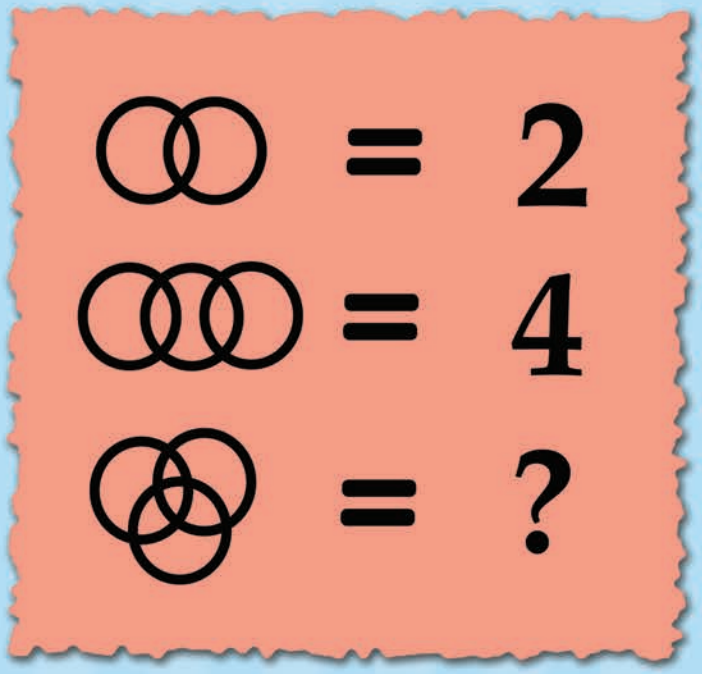

१) अपने दिमाग का इस्तेमाल करें और जवाब दें।

२) दिए गए चित्र में कितने वर्ग हैं पता लगाएँ।

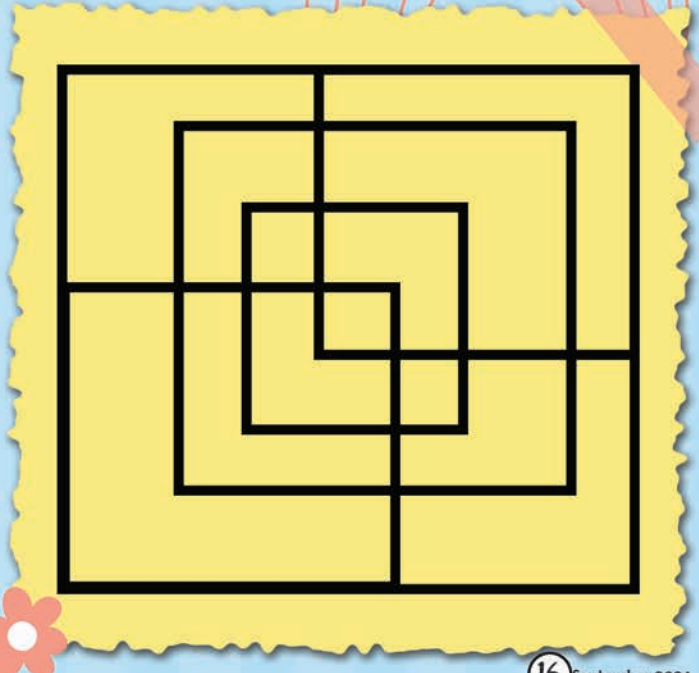

३) एक जैसे दिखाई देने वाले इन दो चित्रों में १० अंतर खोज निकालें।

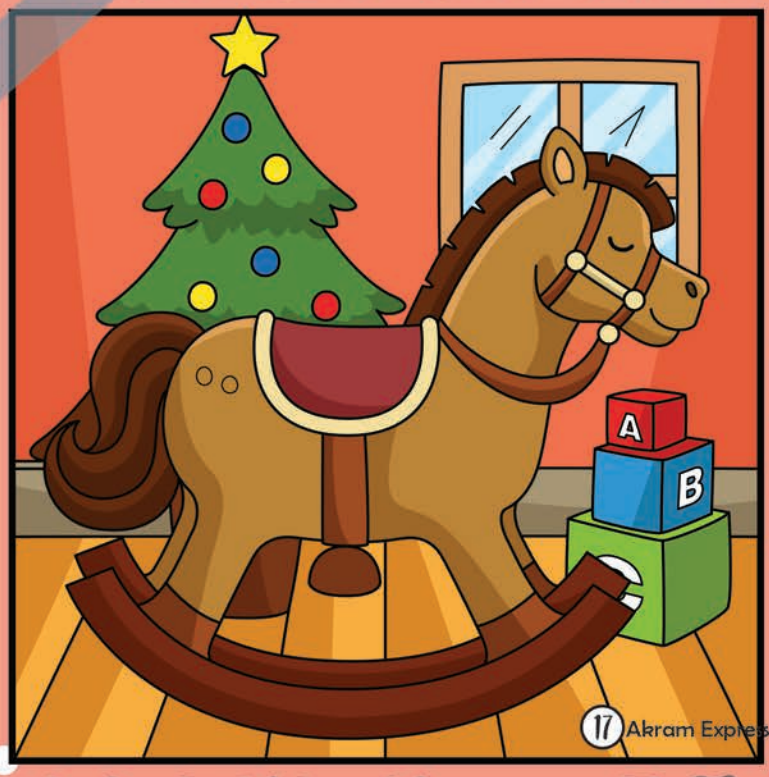

My Creation

दिए गए चश्मे के चित्र को कार्डबोर्ड पर चिपकाएँ और उसे काटकर सजाएँ। फिर हमें आपके जादुई चश्मे का फोटो ९३४३६६५५६२ पर भेजें।

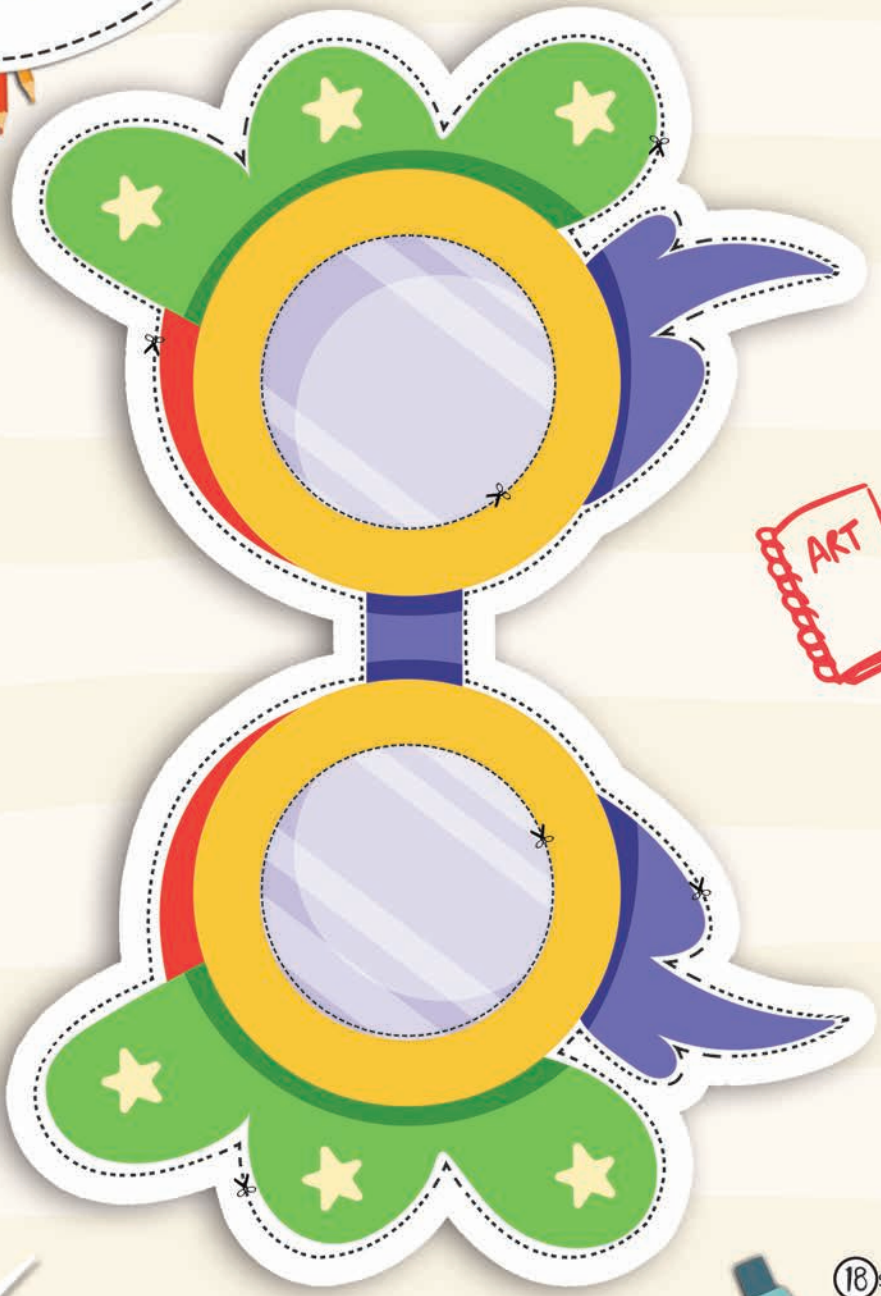

मीठी यादें

दादाश्री के एक भतीजे से उनके घरवाले और अड़ोस-पड़ोस के लोग बहुत तंग आ गए थे। उन भाई को कोई काम करना पसंद नहीं था। उनकी कठोर वाणी से लोगों को इतना दुःख होता था कि उनके आसपास रहना मुश्किल हो जाता था।

एक बार ये भतीजे दादा के पास रहने आए। पैसे कमाने के लिए दादा ने उन्हें कई जगह नौकरी पर लगाने का प्रयास किया। लेकिन उसे कहीं माफिक नहीं आया। अंत में थककर वे खुद ही अपने घर जाने के लिए निकल पड़े। दादा को पता था कि भतीजे के पास ज्यादा पैसे नहीं हैं। इसलिए दादा ने यात्रा के लिए ज़रूरी कुछ पैसे उन्हें भिजवाए। लेकिन भतीजे ने लेने से इंकार कर दिया। उन्होंने कहा, 'चाचा गरीब हैं। गरीब के पैसे मुझे क्यों दे रहे हो?'

उसके बाद कोई रिश्तेदार किसी कारणवश उस भतीजे की शिकायत लेकर आए। दादाजी ने कहा, 'भतीजा तो कितना अच्छा है! पैसे देने पर भी नहीं लेते।' दुनिया में जहाँ लोग पैसे लेने के लिए तैयार रहते हैं, वहाँ ये भाई हमारे देने पर भी नहीं लेते। इस तरह, जब सभी उन भाई का नेगेटिव देखते थे तब दादा ने उनका पॉज़िटिव ढूँढ़ निकाला। और दादाश्री की पॉज़िटिव दृष्टि से शिकायत लेकर आने वाले व्यक्ति की शिकायत भी दूर हो गई।

एक बार दादा उन भतीजे के घर गए। उसी समय वे एक मील चलकर सब्जी लेकर आए। घर आकर जब उन्होंने पैसे गिने तब पता चला कि सब्जी वाली बहन का एक आना उनके पास ज्यादा आ गया है। दादा को घर पर बिठाकर वे भाई एक मील चलकर सब्जी वाली बहन का एक आना लौटाने गए। उन्हें लगा कि सब्जी वाली बहन जब घर जाकर हिसाब करेगी तो उसका एक आना कम निकलेगा तो उसे कितना दुःख होगा! दादा ने उनका यह गुण परिवार वालों को बताया।

इस तरह, पूरा परिवार जिससे परेशान हो गया था, उनके पॉज़िटिव गुण ढूँढ़कर दादा ने सबकी दृष्टि भी पॉज़िटिव कर दी।

शब्द की समझ

एक आना - पुराने ज़माने का पैसा (चल मुद्रा)। एक आना अर्थात् लगभग ६ पैसे

Akram Express

September 2024
Year : 12, Issue : 06
Conti. Issue No.: 138

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

अक्रम एक्सप्रेस में छपने वाली सुंदर मज़ेदार
कहानियों के ऐनिमेशन वीडियो देखने के लिए स्कैन करें **QR Code** और
पाएँ अक्रम एक्सप्रेस की अच्छी-अच्छी स्टोरिज़ के विज़ुअल।

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेवल पर लगे हुए मेम्बरशिप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. AGIA4313# और यदि लेवल पर मेम्बरशिप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. AGIA4313## अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर Whatsapp करें।

१. कच्ची पावती नंबर या ID No., २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मेगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on Behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba Multiprint, Opp. H B Kapadiya New High School, Chhatral-Pratappura Road, At-Chhatral, Tal. Kalol, Dist. Gandhinagar – 382729.